



1

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:1-5 (CSB)**  
 1 Pursue love and desire spiritual gifts, and especially that you may prophesy.  
 2 For the person who speaks in a tongue is not speaking to people but to God, since no one understands him; he speaks mysteries in the Spirit.

2

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:1-5 (CSB)**  
 3 On the other hand, the person who prophesies speaks to people for their strengthening, encouragement, and consolation.  
 4 The person who speaks in a tongue builds himself up, but the one who prophesies builds up the church.

3

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:1-5 (CSB)**

<sup>5</sup> I wish all of you spoke in tongues, but even more that you prophesied. The person who prophesies is greater than the person who speaks in tongues, unless he interprets so that the church may be built up.



4

---

---

---

---

---

---

---

---



5

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:27-28 (CSB)**

<sup>27</sup> Now you are the body of Christ, and individual members of it.

<sup>28</sup> And God has appointed these in the church: first apostles, **second prophets**, third teachers, next miracles, then gifts of healing, helping, leading, various kinds of tongues.



6

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:1-4 (CSB)**

<sup>1</sup> Pursue love and **desire** spiritual gifts, and especially that you may **prophesy**.

<sup>2</sup> For the person who speaks in a tongue is not speaking to people but to God, since no one understands him; he speaks mysteries in the Spirit.



7

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:1-4 (CSB)**

<sup>3</sup> On the other hand, the person who **prophesies** speaks to people for their strengthening, encouragement, and consolation.

<sup>4</sup> The person who speaks in a tongue builds himself up, but the one who prophesies **builds up the church**.



8

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:26 (CSB)**

What then, brothers and sisters? Whenever you come together, each one has a hymn, a teaching, a **revelation**, a tongue, or an interpretation. **Everything** is to be done for **building up**.



9

---

---

---

---

---

---

---

---

1) Prophecy strengthens our faith and encourages us to keep going.



10

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Timothy 1:18-19 (CSB)**

<sup>18</sup> Timothy, my son, I am giving you this instruction in keeping with the ***prophecies previously made about you,*** so that by recalling them you may ***fight the good fight,***



11

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Timothy 1:18-19 (CSB)**

<sup>19</sup> having faith and a good conscience, which some have rejected and have shipwrecked the faith.



12

---

---

---

---

---

---

---

---

2) Remembering a prophetic calling can be spiritual warfare against the world, the devil, and the flesh.



13

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:31 (CSB)**

For you can all prophesy one by one, so that everyone may *learn* and everyone may be encouraged.



14

---

---

---

---

---

---

---

---

3) Prophecy helps us to understand the hidden mysteries of God.



15

---

---

---

---

---

---

---

---

4) Prophecy helps protect the church from “spectator Christianity.”



16

---

---

---

---

---

---

---

---

5) Prophecy is timely.



17

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:1 (CSB)**  
Pursue *love* and *desire* spiritual gifts, and especially that you may *prophecy*.



18

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 13:2 (CSB)**

If I have the gift of **prophecy** and understand all mysteries and all knowledge, and if I have all faith so that I can move mountains but do not have **love**, I am **nothing**.



19

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:24-25 (CSB)**

<sup>24</sup> But if all are **prophesying** and some unbeliever or outsider comes in, he is convicted by all and is called to account by all.



20

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:24-25 (CSB)**

<sup>25</sup> The **secrets of his heart** will be revealed, and as a result he will fall facedown and worship God, proclaiming, "**God is really among you.**"



21

---

---

---

---

---

---

---

---

6) Prophecy can reveal our sin in a way that simultaneously reveals our need for a savior.



22

---

---

---

---

---

---

---

---

**John 4:19 (CSB)**

"I see that you are a prophet."



23

---

---

---

---

---

---

---

---

**John 4:39-42 (CSB)**

<sup>39</sup> Now many Samaritans from that town believed in him because of what the woman said when she testified, "He told me *everything I ever did*."

<sup>40</sup> So when the Samaritans came to him, they asked him to stay with them, and he stayed there two days.



24

---

---

---

---

---

---

---

---



**John 4:39-42 (CSB)**

<sup>41</sup> Many more believed because of what he said.

<sup>42</sup> And they told the woman, "We no longer believe because of what you said, since we have heard for ourselves and know that this really is the **Savior of the world.**"



25

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 14:25 (CSB)**

The **secrets of his heart** will be revealed, and as a result he will fall facedown and worship God, proclaiming, "**God is really among you.**"



26

---

---

---

---

---

---

---

---

7) Prophecy fills both believers and unbelievers with awe and wonder that God is truly here.



27

---

---

---

---

---

---

---

---

Can all believers prophesy?



28

---

---

---

---

---

---

---

---

**Ephesians 4:11-12 (CSB)**

<sup>11</sup> And he himself gave some to be apostles, *some prophets*, some evangelists, some pastors and teachers, <sup>12</sup> to equip the saints for the work of ministry, to build up the body of Christ...



29

---

---

---

---

---

---

---

---

All believers have permission to prophesy, but according to the will of God, not all believers are gifted with the ability to prophesy.



30

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:4-9 (CSB)**

<sup>4</sup> Now there are different gifts, but the same Spirit.

<sup>5</sup> There are different ministries, but the same Lord.

<sup>6</sup> And there are different activities, but the same God works all of them in each person.



31

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:4-9 (CSB)**

<sup>7</sup> A manifestation of the Spirit is **given** to each person for the common good:

<sup>8</sup> to one is given a message of **wisdom** through the Spirit, to another, a message of **knowledge** by the same Spirit,



32

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:4-9 (CSB)**

<sup>9</sup> to another, **faith...**

to another, **prophecy...**



33

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:11 (CSB)**

One and the same Spirit is active in all these, *distributing to each person as he wills.*



34

---

---

---

---

---

---

---

---

**2 Timothy 1:6 (CSB)**

Therefore, I remind you to *rekindle* the gift of God that is in you through the laying on of my hands.



35

---

---

---

---

---

---

---

---

**2 Timothy 1:7 (CSB)**

For God has not given us a spirit of fear, but one of power, love, and sound judgment.



36

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:27-29 (CSB)**

<sup>27</sup> Now you are the body of Christ, and each one of you is a part of it.

<sup>28</sup> And God has placed in the church first of all apostles, second prophets, third teachers, then miracles, then gifts of healing, of helping, of guidance, and of different kinds of tongues.



37

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:27-29 (CSB)**

<sup>29</sup> Are all apostles? Are all **prophets**? Are all teachers?...



38

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 12:31 (CSB)**

Now eagerly desire the greater gifts.



39

---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:3-6 (CSB)**

<sup>3</sup> For by the *grace* given to me, I tell everyone among you not to think of himself more highly than he should think. Instead, think sensibly, as *God has distributed a measure of faith to each one.*



40

---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:3-6 (CSB)**

<sup>4</sup> Now as we have many parts in one body, and all the parts do not have the same function,  
<sup>5</sup> in the same way we who are many are one body in Christ and individually members of one another.



41

---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:3-6 (CSB)**

<sup>6</sup> According to the *grace given to us*, we have different gifts: If *prophecy*, use it *according to the proportion of one's faith*;



42

---

---

---

---

---

---

---

---

If God distributes as he wills,  
should we bother asking?



43

---

---

---

---

---

---

---

---

1. Have I prayed and sincerely asked God for  
the gift?



44

---

---

---

---

---

---

---

---

1. Have I prayed and sincerely asked God for  
the gift?  
2. Am I truly content with the gifts I presently  
have or am I jealous?



45

---

---

---

---

---

---

---

---

- 1. Have I prayed and sincerely asked God for the gift?
- 2. Am I truly content with the gifts I presently have or am I jealous?
- 3. Do I want this gift for the benefit of the church, and not for my own glory, or status, or prestige?



46

---

---

---

---

---

---

---

- 1. Have I prayed and sincerely asked God for the gift?
- 2. Am I truly content with the gifts I presently have or am I jealous?
- 3. Do I want this gift for the benefit of the church, and not for my own glory, or status, or prestige?
- 4. Am I using the gifts I presently have for the greatest benefit of the church?



47

---

---

---

---

---

---

---